भद्रा का निवास और फल —

कुम्भकर्कद्वये मर्त्ये स्वर्गेऽब्जेऽजात्त्रयेऽलिगे ।
स्त्रीधनुर्जूकनक्रेऽधो भद्रा तत्रैव तत्फलम् ॥
स्वर्गे भद्रा शुभं कुर्यात् पाताले च धनागमः ।
मृत्युलोके यदा भद्रा सर्वं कार्यं विनश्यति ॥

कुम्भ, मीन, कर्क, सिंह — इन राशियों में चन्द्र के रहने पर भद्रा मृत्युलोक में, मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक में स्वर्ग तथा कन्या, धनु, तुला, मकर में चन्द्र हो तो पाताल में भद्रा का वास रहता है। जहाँ भद्रा का वास होता है वहीं उसका फल होता है अर्थात् पृथ्वी पर के लिए ~~____~~ प्राणियों का स्वर्ग और पाताल की भद्रा शुभ व धन की लाभ ही कराती है किन्तु मृत्युलोक (पृथ्वी) पर की भद्रा शुभ को भी अशुभ करने वाली होती है जो सब कार्य में वर्जित है।

भद्रा का निर्णय —

शुक्ले पूर्वार्धेऽष्टमी-पञ्चदश्योर्भद्रैकादश्यां चतुर्थ्यां परार्धे
कृष्णेऽन्त्यार्धे स्यात्तृतीया-दशम्योः पूर्वे भागे सप्तमी-शम्भुतिथ्योः

शुक्लपक्ष में अष्टमी और पञ्चदशी के पूर्वार्द्ध में, एकादशी और चतुर्थी के परार्द्ध में एवं कृष्णपक्ष में तृतीया और दशमी के परार्द्ध में, सप्तमी और चतुर्दशी के पूर्वार्द्ध में भद्रा होती है।

P.T.O

भद्रा के मुख-पुच्छ संज्ञा —

पञ्चद्व यद्रिकृताष्टरामरसभूयामादिघट्य: शरा-
विष्टेरास्यमसद्गजेन्दुरसरामाद्र-यश्विबाणाब्धिषु।
यामेष्वन्त्यघटीत्रयं शुभकरं पुच्छं तथा वासरे-
विष्टिस्तिथ्यपरार्द्धजा शुभकरी रात्रौ तु पूर्वार्द्धजा॥

शुक्लपक्ष की चतुर्थी तिथि मे ५ प्रहर, अष्टमी में २ प्रहर, एकादशी में ७ प्रहर, पूर्णिमा में ४ प्रहर की और कृष्णपक्ष की तृतीया में ८ प्रहर, सप्तमी में ३ प्रहर, दशमी में ६ प्रहर, चतुर्दशी में १ प्रहर की आरम्भ की पाँच घटी भद्रा का मुख है, जो अशुभ है। तथा शुक्लपक्ष की चतुर्थी में ८ प्रहर, अष्टमी में १ प्रहर, एकादशी में ६ प्रहर, पूर्णिमा में ३ प्रहर की और कृष्णपक्ष की तृतीया में ७ प्रहर, सप्तमी में २ प्रहर, दशमी में ५ प्रहर, चतुर्दशी में ४ प्रहर की तीन घटी पुच्छ है, जो शुभ है।

परार्द्ध की भद्रा दिन में आ जाय और पूर्वार्द्ध की रात्री में चली जाय तो भद्रा दोष नहीं लगता। यह भद्रा सुख देने वाली होती है। यथा-

दिवाभद्रा यदा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिने।
तदा विष्टिकृतो दोषो न भवेत्सर्वसौख्यदा॥

भद्रा में कृत्य —

विवादे शत्रुसंहारे भयार्ते राजदर्शने।
रोगार्ते वैद्यगमने भद्रा श्रेष्ठतमा स्मृता॥

शास्त्री-I

लग्न साधन प्रकार —

सायनार्कस्य भुक्तांशा भोग्यांशाः स्वोदयैर्हताः।
त्रिंशता विहृता लब्धपलानीष्टात् पलीकृतात्॥
विशोध्यानि ततो भुक्तभोग्यराशिपलान्यपि।
शोध्यान्येवं न यन्मानं शुद्ध्येत् सोऽशुद्धसंज्ञकः॥
शेषं त्रिंशद्गुणं भक्तमशुद्धमानोदयैः।
लब्धमंशाद्यशुद्धर्क्षे शोध्यं योज्यं च शुद्धके॥
क्रमात् सायनलग्नं स्याद् भुक्तभोग्यप्रकारयोः।
अयनांशं च तत् कृत्वा फलार्थं लग्नमुत्तमम्॥

तात्कालिक स्पष्ट सूर्य में अयनांश जोड़कर (यदि भुक्त प्रकार से लग्न बनाना हो तो भुक्तांश को और यदि भोग्य-प्रकार से बनाना हो तो भोग्यांश को) सायनसूर्याक्रान्त राशि के इष्ट देशीय उदयमान से गुनाकर 30 से भाग देकर, लब्ध पलादि (भुक्त या भोग्य) को इष्टकाल के पलों में से घटाकर शेष में से (यदि भुक्त प्रकार हो तो) गत राशि के उदयमानों को तथा (यदि भोग्य प्रकार हो तो) अग्रिम (अर्थात् जिस उदयमान से गुना किया हो, उससे अग्रिम) उदयमानों को जितने घट सके घटाना, जिस राशि तक के उदयमान घटे उसे शुद्ध और जिसके उदयमान न घट सके उस राशि को अशुद्ध राशि समझना।

डॉ० सुदिवर कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना
पूर्णियाँ)

करण विचार —

प्रत्येक तिथि में दो-दो करण होते हैं, अर्थात् तिथि के आधे भाग को एक करण कहते हैं। जो बव आदि नाम से ११ हैं। उनमें क्रम से ७ तक चर आगे ४ स्थिर करण हैं। विष्टि-करण को ही भद्रा कहते हैं जो सब शुभ कार्यों में त्याज्य कहा गया है।

करण नाम — बवं च बालवं चैव कौलवं तैतिलं गरम्।
वणिजं विष्टिमित्याहुः करणानि महर्षयः॥
अन्ते कृष्णचतुर्दश्याः शकुनिर्दर्शभागयोः।
भवेच्चतुष्पदं नागं किंस्तुघ्नं प्रतिपद्दले॥

तिथि	पूर्वार्द्ध	उत्तरार्द्ध	तिथि	पूर्वार्द्ध	उत्तरार्द्ध
कृ०१	बालव	कौलव	शु०१	किंस्तुघ्न	बव
२	तैतिल	गर	२	बालव	कौलव
३	वणिज	विष्टि	३	तैतिल	गर
४	बव	बालव	४	वणिज	विष्टि
५	कौलव	तैतिल	५	बव	बालव
६	गर	वणिज	६	कौलव	तैतिल
७	विष्टि	बव	७	गर	वणिज
८	बालव	कौलव	८	विष्टि	बव
९	तैतिल	गर	९	बालव	कौलव
१०	वणिज	विष्टि	१०	तैतिल	गर
११	बव	बालव	११	वणिज	विष्टि
१२	कौलव	तैतिल	१२	बव	बालव
१३	गर	वणिज	१३	कौलव	तैतिल
१४	विष्टि	शकुनि	१४	गर	वणिज
३०	चतुष्पद	नाग	१५	विष्टि	बव

P.T.O